पाठ 3. तृणभारत

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को एकता का सही अर्थ तथा महत्व समझाना है। इस पाठ द्वारा बच्चे समझ पाएँगे कि कैसे थोड़ा-सा संयम, सहनशीलता एवं नियंत्रण रखकर किसी भी बिगड़ती हुई स्थिति को विकराल बनने से रोका जा सकता है।

पाठ का सारांश

बंजारों के एक कबीले ने गाँव के बाहर डेरा डाला। एक दिन एक बंजारा बनिये की दुकान पर गुड़ लेने पहुँचा। मोल-भाव तय होने के बाद एक तिनके को लेकर ऐसी घटना घटी कि बनिये और बंजारे के बीच झगड़ा हो गया। बनिये की ओर से गाँव के लोग भी आ गए। अकेला बंजारा लड़ता-लड़ता मारा गया। बंजारे के बाकी साथियों ने उसकी लाश देखी तो वे भूखे शेर की तरह लोगों पर टूट पड़े। अब झगड़े ने व्यापक रूप ले लिया। पूरा गाँव बंजारों के ऊपर वार करने लगा। चारों तरफ़ भाले, बरछी, तलवारें तथा लाठियाँ नज़र आ रही थीं। बंजारे पूरे जी-जान से लड़े परंतु मारे गए। बंजारों ने भी गाँव के तीन सौ योद्धाओं को मौत के घाट उतार दिया। एक छोटे-से तिनके ने महाभारत के युद्ध का दृश्य उपस्थित कर दिया पर वह तिनका वहीं दीवार पर चिपका रहा।

अध्यापन संकेत

कहानी के संबंध में आंशिक परिचय देते हुए पाठ का आदर्श वाचन करें। पाठ के महत्वपूर्ण अंशों को समझाते हुए, पाठ का मूल भाव बताएँ।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- बच्चों से बंजारों के जीवन के बारे में चर्चा करें। पूछें, क्या उन्होंने भी बंजारे देखे हैं? उनका पहनावा तथा रहन-सहन कैसा होता है? बंजारे अपना जीवनयापन कैसे करते हैं?
- बच्चों में पशु-प्रेम को विशेष रूप से उभारने का प्रयत्न करें।
- समझाएँ, छोटी-छोटी बातों पर लड़ना-झगड़ना सही नहीं होता। बच्चों को 'एकता का महत्व' के बारे में बताएँ।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।